स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, पार्ट-1,पत्र -2(गद्य विधा)ललित निबन्ध।

***ललित निबन्ध की परिभाषा,आघारभूत तत्व पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी ललित निबन्ध-साहित्य का सामान्य परिचय ।**

-डॉ ०प्रफुल्ल कुमार एसोसिएट प्रोफेसर अध्यक्ष-हिन्दी विभाग आर आर एस कॉलेज मोकामा पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना।

-हिन्दी ललित निबन्ध को अंग्रेजी पर्सनल ऐसे का पर्याय माननेवाले विद्वान मिशल द मोन्तेन को ही इसका जनक माना जाता है। उन्होंने ऐसी सभी साहित्यिक विधाओं को 'ऐसे' अर्थात् प्रयास के नाम से प्रस्तुत किया, जिसमें लेखक की आत्मा के संवहन का प्रयास था,न तो कोई बंधन था और न पांडित्य प्रदर्शन। जयनाथ नलिन के अनुसार अपनी रचनाओं के विषय में उसने अनेक स्थलों पर कहा है कि मेरी रचनाओं में आप मुझे प्राकृत और कृत्रिम और यथार्थ रूप में देख सकते हैं। मेरा व्यक्तित्व ही इनका उद्देश्य है।मैंने अपने यथार्थ को उपस्थित करने का प्रयास किया है । ज्ञानेंद्र वर्मा की दृष्टि से पाश्चात्य निबंध में मोन्तेन से पूर्व निबंध जैसी रचनाओं में दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष अधिक मुख्य था। लालित्य और कलात्मक पक्ष की उपेक्षा होती थी ।शर्मा के अनुसार मोन्तेन द्वारा प्रस्तुत एसाई पाश्चात्य साहित्य में पर्सनल एसे ,व्यक्तिगत निबंध मराठी में ललित निबंध के लिए प्रयुक्त हो रहा है। हिंदी में ऐसे निबंध के लिए व्यक्ति व्यंजक,आत्म व्यंजक आदि कई नाम प्रयुक्त होते हुए देखे जाते हैं। उदाहरण के लिए श्रीवल्लभ शुक्र ललित निबंध को व्यक्ति व्यंजक निबंध नाम देते हैं। शांति स्वरूप गुप्त भावात्मक में ऐसे निबंध ललित निबंध पर बल दिया है।ऐसे आलोचकों की दृष्टि में ललित निबंध की अवधारणा स्पष्ट होती हैं उनमें हिंदी ललित निबंधों का वर्ग पाना कठिन है क्योंकि उनके द्वारा प्रयुक्त शब्द की व्याख्या का आधार ही वैसे साहित्यिक निबंधों के लिए है जिसमें साहित्यिक होने मात्र के अंतर्गत आत्मकथा निबंध स्पष्ट रूप में मिलता है। ज्ञानेंद्र वर्मा ने ललित निबंध के विषय में जो कहा है वह ज्यादा महत्वपूर्ण है ।ललित निबंध विचारात्मक निबंध 2 वर्गों में उन्होंने संपूर्ण हिंदी निबंध को विभाजित करके देखा। प्रसंग वस जयनाथ नलिन द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण अधिक सफल एवं उल्लेखनीय है -उन्होंने संपूर्ण हिंदी निबंध को दो वर्गों में विभक्त किया आत्मपरक वर्ग को 3 वर्गों में विभक्त किया- विचारात्मक भावात्मक और आत्मपरक। तीसरा वर्ग ध्यातव्य है।उन्होंने कहा कि निजात्मक निबंध के वर्ग में भावात्मक और विचारात्मक नहीं समा सकता है जिसे अंग्रेजी में पर्सनल कहते हैं। दोनों प्रकार पर्सनल नहीं होते हुए भी सबके हैं ।मतलब आत्मा का स्वरूप जिसमें आए उसे इनसे अलग ही मानना चाहिए। उसके प्रकार को हम आपत्म परक कहते हैं है या व्यक्ति कहेंगे। ऐसे निबंधों के विषय में इनकी स्पष्ट अभिव्यक्ति है विचारात्मक या भावात्मक निबंध शेष विश्व का भी होकर निबंधकार का भी हो सकता है ।निबंधकार का होकर भी वह शेष विश्व का वह सकता है। म निबंधकार का निजी विश्व का बनता है शेष विश्व का उसका निज नहीं बनता ।यही सबसे गहरी और चमकीली रेखा दोनों के बीच अंतर की पहचान बनती है। इस संबंध में रामस्वरूप चतुर्वेदी ,राजनाथ शर्मा आदि के विचार भी ध्यान देने योग्य है परंतु हम सुप्रसिद्ध निबंधकार के विचारों को अगर देखें तो उन्होंने कहा है कि व्यक्तित्व व्यंजक निबंध और ललित निबंध समानार्थक नहीं हो सकते ।व्यक्ति व्यंजक निबंध की एक कोटि ललित निबंधों के नाम के अंतर्गत आएगी ।व्यक्तित्व की व्यंजना अनेक प्रकार से हो सकती है रूचिवैचित्र या कोई विशेष मनोदशा अपने को प्रकट करने के लिए एक लीला रचती भावनाएं निबंध में प्रस्तुत की गई वस्तु का चयन और नियोजन किया जाए तभी रचना के महत्व को स्थान दिया जाएगा और तभी ललित निबंध कहलाएगा ।लीला भाव प्रधान नहीं भी हो सकता है। जहां वस्तु को राग रंजीत रूप में प्रस्तुत करने का न

होकर भी व्यक्तित्व की व्यंजना उसमें हो ललित निबंध कहना ठीक नहीं होगा। ललित निबंध उसका केवल एक वर्ग होगा विद्यानिवास मिश्र की दृष्टि में ललित निबंध का न्य निबंध से अंतर है। उन्होंने लिखा है कि ललित निबंध में अंतर अनुभव और शैली का भी है ।ललित निबंध में स्मृतियों के ताने बाने से उतनी नहीं आती जितनी आती है शब्दों की चित्र मयता से और भावों की आरोही अवरोही सरसता से जबकि व्यक्ति व्यंजक निबंध में स्मृतियों का ताना-बाना विशेष मतलब रखता है और यह स्मृतियां अपनी होती हुई भी दूसरों में घुले हुए अपनेपन की होती हैं। यही नहीं व्यक्ति व्यंजक निबंध में भाव विचार होते हुए भी व्यक्तित्व प्रस्तुत होते हैं और शब्द आत्मीय संवाद स्थापित करने के लिए। डॉक्टर मिश्र ने यह भी कहा है मैं स्वयं इस ललित निबंध को व्यक्ति व्यंजक निबंध के अंतर्गत एक उप राशि मानता हूं। ललित में कल्पना के स्वच्छंद की उड़ान ज्यादा है उसकी एक कोटि है। मैं अपने थोड़े से निबंधों को ललित मानता हूं जैसे अपने जीवन में कोई घटना अनुभव बनता है। स्पष्ट है कि ललित निबंध व्यक्ति व्यंजनों से पुकारे जाने वाले विशिष्ट निबंधों में से कई समानताएं रखने के बावजूद अनेक गुणों के कारण उनसे भिन्न है। इस संदर्भ में ललित के विषय में विचार कर लेना चाहिए। ललित निबंधकार डॉक्टर विद्यानिवास मिश्र बताते हैं कि सुंदर ललित मनुष्य के द्वारा निर्मित जो सौंदर्य होता है उसे ललित कहते हैं। ललित का मूल अर्थ यह है कि एक अनुपात और न्याय जहां स्थापित होता है वहां ललित होता है। ललित का अर्थ कोमल नहीं होता। ठीक जगह ठीक के साथ ठीक है । इसलिए हम तो समझते हैं ललित शब्द बेल लेटर का अनुवाद है हमारे यहां यह बहुत समय से चला आ रहा है मूल रूप और दोनों की अनिवार्य मानते हुए। ललित में भी केवल सुकुमारता नहीं है, शिव के तांडव नृत्य में उतना ही लालित्य जितना पार्वती के ललित लास्य में। औचित्य उत्पत्ति का ही दूसरा नाम है ललित,ललितनिसर्ग सुंदरता में नहीं है मनुष्य की प्रतिभा से मिली रमणीय ताने में है ।हमारी पुराण सृष्टि में ललिता देवी और एक शिवशक्ति सामान्य अवस्था है दूसरी ओर से वे स्वयं श्रीकृष्ण का पूर्व रूप है और तीसरी ओर से राधा की दर्पण में है जिस पर यह अनुभव करते हुए प्रियतम उसे देख रहे हैं और राधा मोहित हो जाती है और वह छवि ललिता बन जाती है। इन सभी कथाओं के ललिता और लालित्य समरसता लीला की उत्कंठा और स्वरूप विमर्श एक रचना में मिल जाए यह दुर्लभ होती है। रंगीन शब्दावली के बल पर या रंजना के बल पर कोई ललित बनना चाहे अलग बात है। ललित निबंध विषय में जितनी भी बातें की गई हैं उनका सार यह है कि ललित निबंध व्यक्तित्व संपन्न निबंधकार की स्वाधीन मन: स्थिति में रचित अनुभूति पूर्ण सहज संक्षिप्त भावात्मक विधा है ।इसमें निबंधकार वार्तालाप में संवेगात्मक शैली में विभिन्न विषयों को सर्वथा उन्मुक्त भाव से अनियंत्रित अनियमित रूप में रखते हुए निश्चल आत्मा व्यक्ति करता है । व्यक्तित्व संपन्न निबंधकार का तात्पर्य अध्ययन अनुभव एवं अभिव्यक्ति में संपन्न लेखक है। ललित निबंध के आधारभूत तत्व की चर्चा करें तो देखते हैं कि ललित निबंधों में व्यक्तित्व,विषय, विचार या बौद्धिक ज्ञान तथा कल्पना आदि तत्वों की चर्चा आधारभूत तत्वों के अंतर्गत की जा सकती है। इनमें शैली गत आधारभूत तत्व भाषा शैली है

व्यक्तित्व का अर्थ साहित्यकार के व्यक्तित्व से है। ललित निबंधकार अपने व्यक्तित्व को ही अपने निबंधों में अभिव्यक्त करता है ।वह अपने ज्ञान अनुभव एवं अध्ययन के आधार पर निबंध में अपनी बातें रखता है वही उसका व्यक्तित्व है। ललित निबंध में छोटे से छोटे विषय को लेकर बड़ी से बड़ी गंभीर बातें निबंधकार डालता है ।यही उसकी विशेषता बनती है और निबंध को आगे बढ़ाती है। विचार और बौद्धिक ज्ञान भी ललित निबंधकार अपने निबंधों में सामान्य रूप में रखता है। कल्पना का सहारा लेकर आगे बढ़ता है और इसकी भाषा बिल्कुल सामान्य होती है। मुहावरे और कहावतें का भी उपयोग करता है संतुलित सहज बोधगम्य भाषा का प्रयोग करता है । सहजअभिव्यक्ति होती है आत्मीयता पूर्ण वार्तालाप शैली में उन्मुक्त और स्वाधीन चिंतन करते हुए आगे बढ़ता

है। इसकी धारा विच्छेद शैलियां होती है। हास परिहास, विनोदात्मक शैलियां अधिकांश ललित निबंध कारों में देखी जाती है ।निबंध कहानी , आत्मकथा, जीवनी तथा डायरी रेखाचित्र रिपोर्ट यात्रा वर्णन, से समानता रखने वाली शैली बनाता है परंतु इनके अतिरिक्त अलग ही शैली का निर्माण करता है जो ललित कहलाता है। ऐसे प्रमुख ललित निबंधकार हैं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, देवेंद्र नाथ शर्मा कामता प्रसाद सिंह काम, इंद्रनाथ मदान हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अशोक के फूल शिरीष के फूल,कुटज, देवदारू ,आम फिर बौरा गए, बसंत आ गया है, मेरी जन्मभूमि, नाखून क्यों बढ़ते हैं, ठाकुर जी की बटोर, प्रायश्चित की घड़ी, क्या निराश हुआ जाए ,पंडितों की पंचायत, जबकि दिमाग खाली है, आपने मेरा मेरी रचना पढ़ी, समालोचक की डायरी आदि प्रमुख ललित निबंधों की रचना की।देवेंद्र नाथ शर्मा ने साइकिल ,मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना, प्रणाम की प्रदर्शनी, खिलौना, ताला, ऊंचे चढ़कर देखा, आइना बोल उठा जैसे ललित निबंधों की रचना की। विद्यानिवास मिश्र ने छितवन की छांह, हरसिंगार, वसंत ना आवे, घने नीम तरु तले, जमुना के तीरे , मुरली की टेर, तुम चंदन हम पानी, मैंने सील पहुंचाई ,आहुती दो आहुती की बेला है, भोर का आह्वान, तमाल के झरोखे से, गांव का मन ,आंगन का पंछी और बंजारा मन, जैसी अनेक रचनाएं हिंदी साहित्य को समर्पित किया।ललित निबंधों की पर्याप्त संख्या इसलिए भी उपलब्ध नहीं है क्योंकि इसमें सफल व्यक्तित्व वाले निबंध कारों की आवश्यकता पड़ती है। विषय की विविधता मन की स्वच्छंदता और सफल सहज विनोदात्मक शैली में रचना करने की क्षमता के लिए आवश्यक होता है। अतः अन्य विधाओं की अपेक्षा ललित निबंध हिंदी साहित्य के इतिहास में कम ही उपलब्ध है।

******